संगीत अभ्यास पुस्तिका

कोर्स कोड – BHMCL – 104

कार्यक्रम – बी. ए. (परफॉर्मिंग आर्ट्स)

हिन्दुस्तानी संगीत ऑनर्स

कार्यक्रम कोड –BAPFHMH

मंचीय एवं दृश्य कला विद्यापीठ

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदानगढ़ी नई दिल्ली

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

1. प्रो. अनुपम महाजन – संगीत विभाग, संगीत तथा कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय
2. डॉ. सुनंदा पाठक – आनंदवन सोसाइटी, ए – 6 ब्लॉक, पश्चिम विहार, दिल्ली
3. डॉ. प्रेरणा अरोड़ा – संगीत विभाग, जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
4. डॉ. गोपाल कृष्ण शाह - संगीत विभाग, संगीत तथा कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय
5. डॉ. गोविंदरजू भारद्वाज– मंच तथा दृश्य कला विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली
6. डॉ. मल्लिका बैनर्जी - मंच तथा दृश्य कला विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली

पाठ्यक्रम समन्वयक

डॉ. मल्लिका बैनर्जी - मंच तथा दृश्य कला विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली

कवर पेज डिजाइन - डॉ मल्लिका बैनर्जी

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

संगीत अभ्यास पुस्तिका

कोर्स कोड – BHMCL – 104

सूचीपत्र

1.1 भूमिका..... 5

1.2 अधिगम से संप्राप्ति..... 5

1.3 अलंकार..... 5

1.4 राग अल्हैया बिलावल..... 7

1.4.1 राग विवरण..... 7

1.4.2 लक्षण गीत..... 7

1.4.3 द्रुत खयाल..... 8

1.5 राग भूपाली..... 12

1.5.1 राग विवरण..... 12

1.5.2 स्वरमालिका..... 12

(तीनताल में निबद्ध)..... 12

1.5.3 द्रुत खयाल..... 13

1.6.1. राग देस..... 15

1.6.2 स्वरमालिका..... 15

1.6.3 राग देस- लक्षण गीत (झपताल)..... 16

1.6.4 राग देस – द्रुत खयाल (तीनताल में निबद्ध)..... 17

1.7 सरस्वती वंदना..... 19

1.8 भजन..... 19

1.9 प्रेरक गीत..... 20

1.1 भूमिका

संगीत एक ऐसी कला है जिस में क्रियात्मक होने के साथ साथ गायन या वादन के क्षेत्र में कुशल होना भी जरूरी है। कुशलता के लिये सीखना व नियमित अभ्यास करना भी अत्यधिक महत्व रखता है। कंठ संगीत व वाद्य संगीत की अपनी अपनी अलग शिक्षा प्रणाली है। यह कार्यक्रम कंठ संगीत का कार्यक्रम है अतः कंठ संगीत के लिए जिस प्रकार के अनुशीलन का प्रयोजन है इस अभ्यास पुस्तिका में उन्हीं प्रकार से अभ्यास का निर्देश दिया गया है। इस पुस्तिका में सभी पारंपरिक गायन सामग्री का समावेश किया गया है।

इस पुस्तिका में इस सत्र के लिए निर्धारित प्रायोगिक संगीत की सामग्री दी गई है। प्रायोगिक संगीत को सही प्रकार से सिखाने के लिए कुछ विडिओ सामग्री भी तैयार किए गए हैं जो इस कार्यक्रम से सम्बद्ध यू-ट्यूब में उपलब्ध करवाया गया है। शिक्षार्थी वीडियो सुनने के साथ साथ इस पुस्तिका को प्रयोग में लाएंगे तो पाठ्यक्रम के राग, ताल और अन्य गीतों को आसानी से सीख पाएंगे।

1.2 अधिगम से संप्राप्ति

इस अभ्यास पुस्तिका के निर्देशों के अनुपालन करने के बाद विद्यार्थी

1. अपने कंठ स्वर को तैयार कर पाएंगे
2. कंठस्वर को स्थिर रखने के साथ अलंकार गायन का अभ्यास कर पाएंगे
3. राग अल्हैया बिलावल, राग भूपाली तथा राग देस के लक्षणों को बता पाएंगे तथा इन रागों को पहचान पाएंगे।
4. राग अल्हैया बिलावल, राग भूपाली तथा राग देस के लक्षण गीत तथा द्रुत खयाल सरल तानों के साथ गा पाएंगे
5. एक एक सरस्वती वंदना तथा भजन सही प्रकार से गा पाएंगे
6. पाठ्यक्रम में दिए गए तालों की ठेकाओं को समझ कर हाथ से दर्शा पाएंगे।

1.3 अलंकार

कंठ को संगीत उपयोगी बनाने के लिए कुछ अलंकारों का अभ्यास करना जरूरी है।प्रतिदिन नियमित अलंकारों के अभ्यास से कंठस्वर में कंपन नहीं आता, देर तक गाने से की क्षमता बढ़ती है तथा कंठ के पेशियों को बल मिलता है। विद्यार्थियों को नीचे दिए अलंकारों का अभ्यास करना है –

1. सरेग सगरे रेगम रेमग गमप गपम मपध मधप पधनि पनिध धनिसं धसंनि निसरें निरेंसं

   निसरें निरेंसं धनिसं धसंनि पधनि पनिध मपध मधप गमप गपम रेगम रेमग सरेग सगरे

2. सरेगम समगरे रेगमप रेपमग गमपध गधपम मपधनी मनिधप पधनिसं पसंनिध धनिसरे धरेंसंनि निसरेंगं निगरेंसं

   निसरेंगं निगरेंसं धनिसरे धरेंसंनि पधनिसं पसंनिध मपधनी मनिधप गमपध गधपम रेगमप रेपमग सरेगम समगरे

3. सरेसरेग रेगरेगम गमगमप मपमपध पधपधनि धनिधनिसं

   धनिधनिसं पधपधनि मपमपध गमगमप रेगरेगम सरेसरेग

4. सरेसरेगसरेगम रेगरेगमरेगमप गमगमपगमपध मपमपधमपधनि पधपधनिपधनिसं

   संनिसंनिधसंनिधप निधनिधपनिधपम धपधपमधपमग पमपमगपमगरे मगमगरेमगरेस

5. स सरे सरेग सरेगम सरेगमप सरेगमपध सरेगमपधनि सरेगमपधनिसं

   सं संनि संनिध संनिधप संनिधपम संनिधपमग संनिधपमगरे संनिधपमगरेस

6. सरेग समगरे रेगम रेपमग गमप गधपम मपध मनिधप पधनी पसंनिध धनिसं धरेंसंनि निसरें निगरेंसं
7. निसरें निगरेंसं धनिसं धरेंसंनि पधनी पसंनिध मपध मनिधप गमप गधपम रेगम रेपमग सरेग समगरे
8. स सरेस सरेगारेस सरेगमगरेस सरेगमपमगरेस सरेगमपधपमगरेस सरेगमपधनिधपमगरेस सरेगमपधनिसंनिधपमगरेस
9. सं संनिसं संनिधनिसं संनिधपधनिसं संनिधपमपधनिसं संनिधपमगमपधनिसं संनिधपमगरेगमपधनिसं संनिधपमगरेसरेगमपधनिसं
10. सरेगमपमगरे रेगमपधपमग गमपधनिधपम मपधनिसंनिधप धनिसरेंगरेंसंनि निसरेंगांमंगरेंसं निसरेंगांमंगरेंसं धनिसरेंगरेंसंनि मपधनिसंनिधप गमपधनिधपम रेगमपधपमग सरेगमपमगरे

1.4 राग अल्हैया बिलावल

1.4.1 राग विवरण

थाट - बिलावल
वादी – धैवत(ध)
वर्ज्य स्वर - आरोह में मध्यम
समय - दिन का प्रथम प्रहर

जाति - षाड़व-सम्पूर्ण
संवादी – गंधार (ग)
विवादी स्वर - अवरोह में वक्र नि

आरोह – सा रे ग प ध नि सां।
अवरोह - सां नि ध प, घ नि ध प, म ग म रे सा।
पकड़ – ग रे ग प ध नि सां

1.4.2 लक्षण गीत

(तीनताल में निबद्ध)

स्थाई –
तब कहत अल्हैया रूप चतुर
जब शुद्ध सुरन को मेल मिलावत,
दोनों निखाद लगत सुमधुर ॥

अंतरा –
धैवत वादी ग समवादी
समय कहत दिन प्रथम प्रहर ॥

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
														सां	सां
														त	ब
ध	प	म	ग	प	-	नि	नि	सां	-	सां	सां	नि	नि	प	प
क	ह	त	अ	ल्है	ऽ	या	ऽ	रु	ऽ	प	च	तु	र	ज	ब
धनि	सारें	सां	सां	ध	प	मग	मरे	ग	म	प	मग	रे	-	सा	सा
शुऽ	ऽऽ	द्ध	सु	र	न	कोऽ	ऽऽ	मे	ऽ	ल	मिऽ	ला	ऽ	व	त
सा	-	गम	ग	प	-	नि	नि	सां	सां	सां	सां	नि	नि	सां	सां
दो	ऽ	नोऽ	नि	खा	ऽ	द	ल	ग	त	सु	म	धु	र	त	ब
0				3				X				2			

अंतरा

प	-	नि	नि	सां	-	सां	-	सां	गं	गं	मं	गं	रें	सां	-
धै	ऽ	व	त	वा	ऽ	दी	ऽ	ग	ऽ	स	म	वा	ऽ	दी	ऽ
गं	मं	पं	गं	मं	रें	सां	सां	ध	नि	सां	सां	नि	नि	सां	सां
स	म	य	क	ह	त	दि	न	प्र	थ	म	प्र	ह	र	त	ब

1.4.3 द्रुत खयाल

(तीनताल में निबद्ध)

स्थायी – हरि सों चक्र धराऊँ
भीषम नाम कहाऊँ ॥

अंतरा - पांडव सेन समेत सारथी शोणित पूर बहाऊँ
यह न करूँ तो आन तेहारी कापीध्वज ते उतारूँ ॥

स्वरलिपि

स्थायी

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
सां	सां	ध	प	ग	म	प	मं	ग	–	रे	–	स	रे	सा	-
ह	रि	सों	ऽ	च	ऽ	क्र	ध	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	उँ	ऽ
ग	–	ग	मरे	ग	प	नि	नि	सां	–	मांमां	गरें	सरें	संनि	धप	मग
भी	ऽ	प	मऽ	ना	ऽ	म	क	हा	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	उँऽ
0				3				x				2			

अंतरा

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
प	–	प	प	ध	नि	नि	सं	सं	-	सं	सं	-	रें	सं	-
पां	ऽ	ड	व	से	ऽ	ना	स	मे	ऽ	त	सा	ऽ	र	थी	ऽ
सं	-	रें	गं	गं	रें	सं	सं	ध	–	सं	(सं)	ध	नि	प	–
शो	ऽ	णि	त	पू	ऽ	र	ब	हा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	उँ	ऽ
प	प	सं	सं	ध	प	ग	मरे	ग	म	प	मग	रे	–	स	-
य	ह	न	क	रुं	ऽ	तो	ऽऽ	आ	ऽ	न	तेऽ	हा	ऽ	री	ऽ
सां	-	गं	-	मं	रें	ध	नि	सां	-	सरें	संनि	धप	मग	म	ग
का	ऽ	पी	ऽ	ध्व	ज	तें	उ	ता	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	रुं
0				3				x				2			

ताल बद्ध विस्तार

स्थायी

निम्नलिखित तालबद्ध विस्तारों को बंदिश की पहली पंक्ति 'हरि सों चक्र धराऊँ ' कह कर गायें –

	9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
1.	स	-	रे	-	ग	-	-	-	म	-	रे	-	स	रे	स	-
2.	स	रे	ग	-	प	-	-	-	म	ग	म	रे	स	रे	स	–
3.	ग	रे	ग	-	प	-	-	-	म	ग	रे	ग	प	म	ग	-
4.	ग	रे	ग	-	प	-	-	-	ध	नि	ध	-	प	-	-	-
	म	ग	म	-	रे	-	-	-	स	-	रे	-	स	-	-	-
5.	ग	प	ध	नि	ध	-	प	-	म	ग	रे	ग	प	म	ग	-
6.	ग	रे	ग	-	प	-	-	-	ग	प	ध	नि	सं	-	-	-
	0				3				x				2			

अंतरा

निम्नलिखित तालबद्ध विस्तारों को बंदिश की पहली पंक्ति 'पांडव सेन समेत सारथी' कह कर गायें –

	9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
1.	ग	प	ध	नि	सं	-	-	-	सं	रें	सं	नि	ध	-	प	-
2.	सं	-	-	-	सं	रें	सं	-	सं	रें	गं	रें	सं	नि	ध	प
3.	सं	नि	ध	प	ग	प	ध	नि	ध	प	ग	प	ध	नि	सं	-
4.	ग	रे	ग	प	म	ग	म	रे	ग	प	ध	नि	सं	-	-	-
	0				3				x				2			

स्थायी की तानें

निम्न लिखित तानों को 'हरि सों चक्र' – बोल कर गायें –

1. सरे गप धनि धप मग मरे सरे स –
2. गप धनि सरें संनि धप मग मरे स-
3. सरे गरे गप धनि सरे संनि धप मग
4. गरे गप धनि सरें संनि धप मग मरे
5. गप धनि धप गप धनि सरें संनि धप

निम्न लिखित तानों को 'हरि सों चक्र धराऊँ ' – बोल कर गायें –

6. सरे गरे गप गप धनि धप मग मरे गप धनि सरें संनि धप मग मरे स-
7. सरे गग रेग पप गप धनि धप गप गप धनि सरें गरें संनि धप मग मरे

अंतरा की तानें

निम्न लिखित तानों को 'पांडव सेन स' – बोल कर गायें –

1. संनि धप मग मरे सरें गप धनि सं-
2. गप धनि धप मग मरे गप धनि सं–
3. सरें गरें सरें संनि धप गप धनि सं-
4. सरे गग रेग पप गप धनि सरें सं-

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

1.5 राग भूपाली

1.5.1 राग विवरण

थाट – कल्याण
वादी – गंधार (ग)
वर्ज्य स्वर - आरोह में मध्यम तथा निषाद

जाति – औड़व - औड़व
संवादी – धैवत(ध)
समय – रात का प्रथम प्रहर

आरोह – सा रे ग प ध सां
अवरोह – सां ध प ग रे सा
पकड़ – ग रे सा ध़, सा रे ग, प ग, ध प ग, रे सा।

1.5.2 स्वरमालिका

(तीनताल में निबद्ध)

स्थायी

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	रे	ग	ऽ	प	ग	ध	प	ग	ऽ
ग	प	ध	सां	रें	सां	ध	प	सां	प	ध	प	ग	रे	सा	ऽ
0				3				X				2			

अंतरा

ग	ग	प	ध	प	सां	ऽ	सां	ध	ध	सां	रें	गं	रें	सां	ध
गं	गं	रें	सां	रें	रें	सां	ध	सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	ऽ
0				3				X				2			

1.5.3 द्रुत खयाल

(तीनताल में निबद्ध)

स्थायी

जाऊँ तोरे चरण कमल पर वारी

हे गोपाल गोविंद मुरारी, शरणागत हूँ द्वार तिहारी

अंतरा

अनगिन दुरित भर्यो हूँ जड़मति

किस विध पाऊँ चतुर तुम्हरे पद, तुम ही जग के एक आधार

स्थायी

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
ग	ग	ध	प	ग	रे	ग	रे	सा	ध़	सा	रे	ग	-	-	ग
जा	ऊँ	तो	रे	च	र	ण	क	म	ल	प	र	वा	ऽ	ऽ	री
ग	प	ध	रें	सां	–	सां	सां	सां	रें	सां	रें	सां	ध	प	ग
हे	ऽ	गो	ऽ	पा	ऽ	ल	गो	विं	ऽ	द	मु	रा	ऽ	ऽ	री
सां	सां	गं	रें	ध	ध	सां	–	प	ध	रें	सां	ध	प	ग	ग
श	र	णा	ऽ	ग	त	हूँ	ऽ	द्वा	ऽ	र	ति	हा	ऽ	ऽ	री
0				3				x				2			

अंतरा

ग	ग	ग	ग	प	प	सां	ध	सां	-	सां	सां	सां	रें	सां	सां
अ	न	गि	न	दु	रि	त	भ	र्यो	ऽ	हूँ	ऽ	ज	ड़	म	ति
ध	ध	ध	ध	सां	-	सां	सां	सां	रें	सां	रें	सां	-	ध	पग
कि	स	वि	ध	पा	ऽ	ऊँ	च	तु	र	तु	म्ह	रे	ऽ	प	द
सां	सां	गं	रें	ध	ध	सां	-	प	ध	रें	सां	ध	प	ग	ग
तु	म	ही	ऽ	ज	ग	के	ऽ	ए	ऽ	क	आ	धा	ऽ	ऽ	र
0				3				x				2			

ताल बद्ध विस्तार

स्थायी – प्रत्येक बार स्थायी की पहली पंक्ति 'जाऊँ तोरे चरण कमल पर वारी' कह कर विस्तार गायें

	9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
1.	सा	-	रे	-	ग	-	-	-	ग	-	रे	-	सा	ध़	सा	-
2.	ग	रे	सा	-	ध़	-	-	-	सा	रे	ग	रे	ग	-	-	-
3.	ग	रे	ग	-	प	-	-	-	ग	रे	सा	ध़	सा	रे	ग	-
4.	ग	रे	ग	-	प	-	-	-	ध	-	प	-	ग	रे	सा	-
5.	ग	रे	ग	-	प	-	-	-	ग	प	सां	ध	सां	-	-	-

अंतरा - प्रत्येक बार अंतरा की पहली पंक्ति 'अनगिन दुरित भर्यो हूँ जड़मति' कह कर विस्तार गायें

1.	सां	-	-	-	ध	-	प	-	ग	प	ध	-	सां	-	-	-
2.	सां	-	ध	प	ग	-	रे	-	ग	प	ध	-	सां	-	-	-
3.	ग	रे	प	ग	ध	प	सा	ध	सां	-	सां	सां	ध	रें	सां	-

तानें – "जाऊँ तोरे चरण -" कह कर तानें सम से शुरू करें –

1. सरे गप धसं रेंस धप गरे गरे स-
2. सरे गग रेग पप गप धप गरे स-
3. गग रेप पग संसं धप गरे गरे स-
4. गरे पग धप संध रेंसं धप गरे स-
5. सरे गरे गप गप धप धसं धप गरे
6. सरे गप रेग पध गप धसं धप गरे

शेष दो तानें स्थायी की पहली पंक्ति पूरी बोलने का बाद गायें -

1. सरे गरे रेग पग गप धप पध संध धसं रेंसं सरें गगं रेंसं धप गरे स-
2. गग रेसा पप गरे धध पग संसं धप रेंरें संध गगं रेंसं धसं धप गरे स-

1.6.1. राग देस

राग विवरण

थाट – खमाज

जाती – औड़व सम्पूर्ण

वर्जित स्वर – आरोह में गया तथा ध

गायन समय – रात्री का दूसरा प्रहर

वादी स्वर – पञ्चम

संवादी स्वर – ऋषभ

इस राग मे आरोह में शुद्ध निषाद और अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग होता है।

आरोह – स रे म प नि सं

अवरोह – सं नि ध प म ग रे स

पकड़ – रे म प, नि ध प, ध म ग रे, ग नि स

1.6.2 स्वरमालिका

स्वरमालिका (तीन ताल)

स्थायी

5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4
नि	ध	प	म	ग	रे	ग	स	रे	रे	म	प	नि	नि	सां	ऽ
रें	गं	रें	सं	नि	ध	म	प	सं	नि	ध	प	म	ग	रे	रे
रे	ग	रे	प	म	ग	रे	स	सं	रें	सं	नि	ध	प	म	प
2				0				3				x			

अंतग

म	ऽ	म	प	ऽ	प	नि	ऽ	नि	सां	ऽ	सां	मं	गं	रें	सां
रें	पं	मं	गं	सं	रें	नि	सां	नि	नि	सां	रे	सां	नि	ध	प
2				0				3				x			

1.6.3 राग देस- लक्षण गीत (झपताल)

स्थायी

कहे चतुर अब मूरत देस की गुणी सुमत।

संपूरण अति मधुर सोरट सी नि की संगत ।।

अंतरा

वादि सुध कहे रिखब न्यास पंचम करत।

ध ग विशद सुर लगत भेद हर रंग सुमत ।।

स्वरलिपि

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ध	म	मग	रेग	स	रे	म	नि	ध	प
क	हे	चऽ	तुऽ	र	अ	ब	मू	र	त
नि	सां	सां	निसां	रेंसां	नि	धप	म	नि	प
दे	ऽ	स	कीऽ	ऽऽ	गु	णीऽ	सु	म	त
रे	-	प	म	गरे	सा	रे	नि़	सा	सा
सं	ऽ	पू	र	णऽ	अ	ति	म	धु	र
रे	–	म	प	नि	सांनि़	धप	म	नि	प
सो	ऽ	र	ट	सी	निऽ	कीऽ	सं	ग	त
x		2			0		3		

अंतरा

म	–	प	नि	नि	सां	सां	नि	सां	सां
वा	ऽ	दि	सु	ध	क	हे	रि	ख	ब
नि	–	सां	सां	–	निसारेंसां	निध	म	नि	प
न्या	ऽ	स	पं	ऽ	च	म	क	र	त
सां	नि	ध	म	म	ग	रे	नि़सरे	नि़	सा
ध	ग	वि	श	द	सु	र	लऽऽ	ग	त
रे	–	म	प	नि	सांनि़	धप	म	नि	प
भे	ऽ	द	ह	र	रं	ग	सु	म	त
x		2			0		3		

1.6.4 राग देस – द्रुत खयाल (तीनताल में निबद्ध)

स्थायी

मेहा रे! बन बन डार डार, मुरला बोले

मेहा! बौछारन बरसे।।

अंतरा

काली घटा घन फिर उमड़ावत

पपीहा बोले सदारंग मनवा लरजे

मेहा! बौछारन बरसे।।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
														म	प
														मे	ऽ
नि	–	सां	-	सां	रें	सां	नि	ध	प	ध	म	–	म	म	प
हा	ऽ	रे	ऽ	ब	न	ब	न	डा	ऽ	र	डा	ऽ	र	मु	र
मप	ध	म	ग	रे	-	-	-	सां	–	नि	–	ध	प	म	प
लाऽ	ऽ	बो	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	बौ	ऽ
ध	-	म	ग	म	ग	रे	-	रेग	मप	धप	मग	रेग	सरे	म	प
छा	ऽ	र	न	ब	र	से	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	मे	ऽ
X				2				0				3			

म	–	म	म	प	–	नि	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	सां	सां
का	ऽ	री	घ	टा	ऽ	घ	न	फि	र	उ	म	ड़ा	ऽ	व	त
रें	रेंगं	रें	सां	रें	नि	सां	-	सां	सां	–	नि	ध	–	म	प
प	पीऽ	हा	ऽ	बो	ऽ	ले	ऽ	स	दा	ऽ	रं	ऽ	ग	म	न
मप	ध	म	मग	रे	-	-	-	सां	-	नि	–	ध	-	म	प
वाऽ	ऽ	ल	रऽ	जे	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	बौ	ऽ
X				2				0				3			

नोट : - अंतिम पंक्ति को स्थायी के अनुरूप गायें

ताल बद्ध विस्तार

स्थायी – प्रत्येक बार स्थायी की पहली पंक्ति 'मेहा रे! बन बन डार डार ऽऽ' कह कर विस्तार गायें

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
1.	नि	-	-	-	सां	-	-	-	रे	-	ग	-	नि	सा	मे	ऽ
2.	रे	-	म	–	प	-	-	-	म	ग	रे	ग	स	-	मे	ऽ
3.	नि	सा	रे	म	प	-	-	-	ध	म	ग	रे	-	-	-	-
	रे	प	म	ग	रे	-	-	-	रे	–	ग	–	नि	स	मे	ऽ
4.	रे	म	प	-	नि	-	-	-	म	प	नि	–	सां	-	-	-
	X				2				0				3			

अंतरा – प्रत्येक बार अंतरा की पहली पंक्ति 'कारी घटा घन फिर उमड़ावत' कह कर विस्तार गायें -

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
1.	नि	-	-	-	सां	-	-	-	प	–	नि	–	सां	-	-	-
2.	रें	–	गं	–	नि	–	सां	–	नि	सां	रें	–	नि	ध	-	प
3.	रें	मं	गं	-	रें	-	-	-	रें	-	गं	–	नि	–	सां	-
	X				2				0				3			

तानें – प्रत्येक तान 'मेहा रे!' कह कर शुरू करें –

1. निसा रेम पनि सारें सांनि धप मग रेग सा-
2. सारें सांनि धप मप निनि धप मग रेग सा-
3. निसा रेम सारे मप रेम पनि धप मग रे-
4. मम गरे मप निसां रेंमं गरें सांनि धप मग रेसा
5. रेम पनि धप मप निसां रेंमं गरें सांनि धप मप
6. मम गरे निनि धप सारें सांनि धप मग रेग सा-

अंतिम तान स्थायी की पूरी पहली पंक्ति गाने के बाद सम से गायें -

7. निसा रेम गरे मप निनि धप मप निसां रेंमं गरें सांनि धप मग रेसा

1.7 सरस्वती वंदना

कवि – सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

वर दे, वीणावादिनी वर दे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे !
वीणावादिनि वर दे।

काट अंध्-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे ! वीणावादिनि वर दे।

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव
नवल कंठ, नव जलद-मन्द रव;
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर, नव स्वर दे ! वीणावादिनि वर दे।।

1.8 भजन

चलो मन गंगा जमुना तीर,
गंगा जमुना निर्मल पानी, शीतल होत शरीर,
चलो मन गंगा जमुना तीर ।।

बंसी बजावत गावत कान्हा,
संग लिये बलबीर,
चलो मन गंगा जमुना तीर ।।

मोर मुकुट पीताम्बर सोहे,
कुण्डल झलकत हीर,
चलो मन गंगा जमुना तीर ।।

'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर,
चरण कमल पै शीश,
चलो मन गंगा जमुना तीर ।।

लेखिका – मीरा बाई

1.9 प्रेरक गीत

तुम समय की रेत पर छोड़ते चलो निशान,
देखती तुम्हें ज़मीन देखता है आसमां

लिखते चलो नौजवान नित नयी कहानियाँ,
तुम मिटा दो ठोकरों से ज़ुल्म की निशानियाँ
कल की तुम मशाल हो सबसे बेमिसाल हो,
तिनके तिनके को बनादो ज़िन्दगी का आशियाँ

तुम समय की रेत पर छोड़ते चलो निशान,
देखती तुम्हें ज़मीन देखता है आसमां

ये निशान एक दिन जहान का अमन बने,
ये निशान एक दिन प्रीत का चमन बने
हँसते हुए हमसफ़र गाते चलें हो निडर,
आगे आगे बढता चले ज़िन्दगी का कारवां

तुम समय की रेत पर छोड़ते चलो निशान,
देखती तुम्हें ज़मीन देखता है आसमां

तुम जिधर चलो उधर रास्ता बने नया,
एक उठाये सबका बोझ वक़्त वो चला गया
सब कमायें साथ साथ काम करें सबके हाथ,
जो भी आगे बढ़ रहा है देखता उसे जहां

तुम समय की रेत पर छोड़ते चलो निशान,
देखती तुम्हें ज़मीन देखता है आसमां ॥

लेखक – अज्ञात

1.10 पाठ्यक्रम के ताल

संगीत में सुर ताल और शब्द की सांझेदारी बराबर की है। हालांकी इन तीनों तत्वों का पृथक रूप भी कुछ कम महायत्वपूर्ण नहीं। पर आम तौर पे साधारण जनों को तीनों तत्वों से सजा हुआ संगीत ही अधिक प्रिय है। भारतीय संगीत में ताल का जिस प्रकार से व्यवस्थित रूप से प्रयोग होता है उस प्रकार से ताल का प्रयोग विश्व के किसी संगीत पद्धति में नहीं होता। कुछ ताल कुछ विशेष शैली के ही साथ प्रयुक्त होता है। जैसे ध्रुपद के साथ चौताल, सूलताल आदि तालों का ही प्रयोग होता है वहीं खयाल के साथ एकताल और तीनताल का प्रयोग अधिक देखने को मिलता है। इस सत्र में आप एकताल, रुपक और तिलवाड़ा ताल के बारे में जानेंगे।

रुपक ताल

लोकप्रिय तालों में से एक 'रूपक ताल' को तबले पर बजाया जाता है। इसका प्रयोग शास्त्रीय और उपशास्त्रीय दोनों ही प्रकार की रचनाओं में समान रूप से होता है। विगत कुछ वर्षों में इस ताल में विलंबित ख्याल का गायन भी होने लगा है।

इस ताल में 7 (सात) मात्राएं होती हैं और इसके तीन विभाग होते है। प्रथम विभाग तीन मात्रा का होता है और शेष दो विभाग दो-दो मात्राओं के होते है। इस ताल की पहली मात्रा पर खाली हैं एवं चौथी एवं छठवीं मात्रा पर ताली का प्रयोग होता है। हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में केवल मात्र यही एक ताल है जिसके पहली मात्रा पर खाली है और यही इस ताल सम भी है।

आजकल यह ताल बहुत प्रचार में है। मध्य लय के ख्याल तथा वाद्य वादन में मध्ययले गतों के अतिरिक्त भाव संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, गजलों और भजनों में भी इस ताल का प्रयोग किया जाता है। इस ताल में स्वतंत्र तबला वादन भी प्रस्तुत किया जाता है और पेशकार, कायदे, रेले, टुकड़े, मुखड़े तथा गतें जैसी रचनाएं इसमें बजाते है। पखावज में तीव्रा ताल तथा कर्नाटक संगीत में मिश्र जाति का त्रिपुट ताल इसके सदृश्य माने जाते है।

तबले पर इसका ठेका इस प्रकार है -

1	2	3	4	5	6	7
ति	ति	ना	धिं	ना	धिं	ना
0			1		2	

एकताल

शास्त्रीय संगीत की पद्धति में सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रचलित तालों में से एक ताल "एकताल" है। यह तबले का ताल है और इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह ताल अति विलंबित लय से द्रुत लय तक पूरी सफलता के साथ बजाया जा सकता है।

ख्याल गायन शैली में विलंबित लय में इसका बहुत प्रचार तथा प्रसार है। सभी शास्त्रीय ख्याल गायक अपना गायन विलंबित एक ताल में ही शुरू करते है और इसी कारण यह ताल शास्त्रीय संगीत में एक अहम स्थान रखती है। गायक इस ताल में बड़ा ख्याल, मध्य एवं छोटा ख्याल एवं द्रुत में तराना आदि का गायन मुख्य रूप से करते है। इसके अति द्रुत लय में आ जाने पर कभी कभी तिरकिट के स्थान पर 'त्रिक' बोल को बजाया जाता है। तबले पर मुक्त अथवा एकल वादन आदि के लिए भी इसका मुख्य रूप से प्रयोग किया जाता है। विलंबित, मध्य और द्रुत गतों की संगति भी इस ताल में मुख्य रूप से

इस ताल को तीन विभिन्न छंदों में (चतुर्मात्रिक, त्रिमात्रिक तथा द्विमात्रिक) प्रयोग करने की परंपरा भी पाई जाती है। आधुनिक समय में इस ताल में 12 (बारह) मात्राएं होती हैं और इसमें दो – दो मात्राओं के छह विभाग होते है। इसमें पहली, पाँचवी, नौवीं और ग्यारहवीं मात्राओं पर ताली तथा तीसरी और सातवीं मात्राओं पर खाली होती है।

तबले पर इसका ठेका निम्न प्रकार दर्शाया जाता है -

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	कत्	ता	धागे	तिरकिट	धिं	ना
x		0		2		0		3		4	

तिलवाड़ा ताल

तिलवाड़ा ताल तीन ताल की ही भांति एक ताल होती है। यह मुख्य रूप से तीन ताल का ही विलंबित स्वरूप है। सोलह मात्रा में निहित विलंबित ख्याल गायन की संगति इसी ताल द्वारा की जाती है। क्योंकि यह ताल तीन ताल की ही भांति वर्णित है अतः कुछ विद्वान इसे धीमा त्रिताल के नाम से भी संबोधित करते है।

इसमें भी तीन ताल की ही भांति 16 मात्राएं होती है तथा इसके चार विभाग होते है। प्रत्येक विभाग में चार-चार मात्राएं होती है। इसमें भी पहली, पांचवी और तेरहवीं मात्रे पर ताली और नौवीं मात्रे पर खाली होती है। यह ताल तीन ताल की अपेक्षा थोड़ा गंभीर होता है।

तबले पर इसका ठेका निम्न प्रकार दर्शाया जाता है

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	तिरकिट	धीं	धीं	धा	धा	तिं	तिं	ता	तिरकिट	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं
x				2				0				3			

अभ्यास के लिए गतिविधि

1. बताए गए अलंकारों के आधार पर पाठ्यक्रम के रागों के स्वरों को लेकर अलंकार बनाए और गाने का अभ्यास करे।
2. सभी पाठ्यक्रम के रागों में दिए गए तालबद्ध विस्तार के अनुरूप शिक्षक के देख रेख में स्वयं नए तालबद्ध विस्तार बनाएं।
3. सभी पाठ्यक्रम के रागों में दिए गए तानों के अनुरूप स्वयं कुछ तानें बनाने की कोशिश करें।
4. पाठ्यक्रम के सभी तालों को हाथ से दर्शाने का अभ्यास करें।

अभ्यास प्रश्नावली

1. राग अल्हैया बिलावल के लक्षण गीत का स्थायी बताईए।
2. निम्नलिखित आरोह – अवरोह से राग पहचानिए –
   आरोह – सा रे म प नि सां
   अवरोह – सां नि ध प म ग रे सां
3. सरस्वती वंदना "वीणा वादिनी वर दे" के रचयिता कौन हैं?
4. कहरबा ताल के संबंध में विस्तारपूर्वक बताइए।
5. राग भूपाली का विवरण दीजिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. क्रमिक पुस्तक मालिका (भाग – 1)
   लेखक - पंडित विष्णु नारायण भातखंडे

2. क्रमिक पुस्तक मालिका (भाग – 4)
   लेखक - पंडित विष्णु नारायण भातखंडे

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY